Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University

(Accredited A++ by NAAC)

University in News on 13 May 2024

Dainik Jagran Page - 04

गोवि में अब बीएफए-एमएफए व बीपीए-एमपीए की पढ़ाई

ललित कला एवं संगीत विभाग में अगले सत्र से पाठ्यक्रम के संचालन पर हो रहा विचार

- वित्तपोषित प्रारूप शुरू करने की है योजना, अड़चन की स्थिति में स्व-वित्तपोषित होगा पाठ्यक्रम
- विश्वविद्यालय की कोशिश है कि यह पाठ्यक्रम सत्र 2024-25 से ही संचालित होने लगे

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : वह दिन दूर नहीं जब ललित कला व संगीत के विद्यार्थियों को बीएफए-एमएफए (बैचलर व मास्टर आफ आर्ट) और बीपीए-एमपीए (बैचलर व मास्टर आफ परफार्मिंग आर्ट) करने के लिए विद्यार्थियों को काशी हिंदू विश्वविद्यालय व लखनऊ विश्वविद्यालय जैसे उच्च शिक्षण संस्थानों की ओर रुख नहीं करना होगा। उन्हें यह पाठ्यक्रम करने का मौका गोरखपुर में ही मिल जाएगा। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय इन सभी व्यावसायिक पाठ्यक्रम को ललित कला एवं संगीत विभाग में संचालित करने की दिशा में आगे बढ़ चला है।

विश्वविद्यालय की योजना इस पाठ्यक्रम को वित्तपोषित पाठ्यक्रम के रूप में शुरू करने की है लेकिन इसमें अगर अड़चन आई तो संस्थान इसे स्व-वित्तपोषित पाठ्यक्रम के रूप में भी शुरू कर सकता है। विश्वविद्यालय की पूरी कोशिश है कि यह पाठ्यक्रम सत्र 2024-25 से ही संचालित होने लगे। यदि किसी वजह से यह संभव नहीं हो सका तो सत्र 2025-26 में तो हर हाल में यह पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय में संचालित होंगे, ऐसा विश्वविद्यालय प्रशासन का कहना है। वर्तमान में ललित कला व मंच कला एक विषय के रूप में स्नातक कला पाठ्यक्रम का हिस्सा है, जिसे तीन विषय में से एक विषय के रूप में विद्यार्थियों को पढ़ने का अवसर मिलता है। ऐसे में जो विद्यार्थी इन विषयों में विशेषज्ञता वाला पाठ्यक्रम करना चाहते हैं, उन्हें उन संस्थानों की ओर रुख करना पड़ता है, जहां इनका संचालन होता है। ऐसा इसलिए कि गोरखपुर और आसपास के किसी जिले में इस पाठ्यक्रमों का स्वतंत्र रूप से संचालन नहीं होता। जो विद्यार्थी किन्हीं वजहों से दूसरे जिलों की ओर रुख नहीं कर पाते और मजबूरी में ललित कला व मंच कला को स्नातक के एक विषय के रूप में पढ़ने तक सीमित रह जाते हैं। इसकी वजह से वह रोजगार के कई विकल्प उन्हें नहीं मिल पाते। विश्वविद्यालय में बीएफए-एमएफए और बीपीए-एमपीए शुरू होने से उनकी यह मंशा अपने क्षेत्र में ही पूरी हो जाएगी, रोजगार के तमाम विकल्प भी मिल जाएंगे।

गोरखपुर विश्वविद्यालय • जागरण

> हमारी कोशिश है कि बीएफए-एमएफए और बीपीए-एमपीए पाठ्यक्रम का संचालन वित्तपोषित पाठ्यक्रम के तौर पर हो पर उसमें कुछ समय लग सकता है। इसलिए फिलहाल इन पाठ्यक्रमों को वित्तपोषित पाठ्यक्रम के तौर पर संचालित करने पर विचार किया जा रहा है।
>
> **प्रो. पूनम टंडन**, कुलपति, दीदउ गोरखपुर विश्वविद्यालय

पाठ्यक्रमवार सीटों का हो चुका है निर्धारण

विश्वविद्यालय से मिली जानकारी के अनुसार बीएफए-एमएफए और बीपीए-एमपीए की सीटों का संख्या का निर्धारण भी प्रारंभिक तौर पर कर लिया गया है। बीपीए पाठ्यक्रम के गायन में 30, सितारवादन में 20 और तबला में 20 सीटें होंगी। बीएफए के पेंटिंग में 20, व्यावहारिक कला में 15 और मूर्तिकला में 10 सीटों की उपलब्धता रहेगी। एमपीए के गायन में 20, सितारवादन में 15 व तबला में 15 और एमएफए के पेंटिंग में 20, व्यावहारिक व मूर्तिकला में 15-15 सीटों पर प्रवेश लेने की योजना है। कुल मिलाकर स्नातक के लिए 115 और परास्नातक के लिए 100 सीटें निर्धारित की गई है।

Amar Ujala Page - 05

डीडीयू : बीपीए और बीएफए कोर्स के लिए कवायद शुरू

सेल्फ फाइनेंस के बजाय रेगुलर कोर्स के रूप में चलाने में आ रहीं अड़चनें

संवाद न्यूज एजेंसी

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में बैचलर ऑफ फाइन आर्ट्स और बैचलर ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स पाठ्यक्रम के संचालन के लिए कवायद शुरू हो गई है। अब तक विद्यार्थी बीए में इसे एक विषय के तौर पर लेते हैं और फिर इसमें एमए करते हैं, लेकिन विभिन्न संस्थानों में चयन के समय इसे प्राथमिकता नहीं दी जाती।

विश्वविद्यालय प्रशासन इसे नियमित पाठ्यक्रम के रूप में संचालित करना चाहता है, लेकिन नियमित पाठ्यक्रम के लिए कई तरह की औपचारिकताएं पूरी करनी होती हैं। यदि सत्र 2024-25 में सेल्फ फाइनेंस कोर्स के रूप में संचालन नहीं हुआ तो सत्र 2025-26 से रेगुलर कोर्स के रूप में संचालन की अनुमति शासन से मिल सकती है।

विश्वविद्यालय में परास्नातक में भी एमए की बजाय एमएफए और एमपीए के संचालन की योजना है। देश के ज्यादातर विश्वविद्यालयों में फाइन एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स को प्रोफेशनल कोर्स का दर्जा दिया जा चुका है।

किसी शिक्षण संस्थान या विभिन्न एजेंसियों या एकेडमी में चयन के वक्त डिग्री की जांच होती है तो गोरखपुर विश्वविद्यालय के विद्यार्थी इसी में छंट जाते हैं। दूसरे संस्थानों के विद्यार्थी प्रोफेशनल कोर्स की डिग्री लगाते हैं तो डीडीयू वाले बीए और एमए की। यहां पर करीब एक दशक से प्रोफेशनल कोर्स को लेकर प्रयास होते रहे हैं लेकिन अलग-अलग कारणों से मामला अधर में अटका रहा।

> फाइन एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स के प्रोफेशनल कोर्स नहीं होने के कारण यहां के छात्रों के विभिन्न संस्थानों में चयन में मुश्किलें आती हैं। इसको लेकर कोशिश जारी है। नियमित पाठ्यक्रम के रूप में संचालन में कुछ अड़चनें हैं। इसे देखते हुए सेल्फ फाइनेंस कोर्स पर भी मंथन किया जा रहा है।
>
> **- प्रो. पूनम टंडन, कुलपति** गोरखपुर विश्वविद्यालय

वर्तमान में बीए के विद्यार्थी अन्य विषयों के साथ किसी एक विषय के रूप में ललितकला या संगीत पढ़ते हैं। प्रोफेशनल कोर्स होने पर यूजी में ही फाइन आर्ट्स और परफार्मिंग आर्ट्स के विषयों की अलग-अलग पढ़ाई हो सकेगी।

भारत में सर्वत्र गूंजती है गोरखनाथ की गोरखबानी

गोरखपुर। गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में योग कार्यशाला में रविवार को योग प्रशिक्षण एवं ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी रहे। ने कहा कि योग बहुत व्यापक है। गोरखनाथ की गोरखबानी भारत में सर्वत्र गूंजती है। योग प्रशिक्षण डॉ. विनय कुमार मल्ल ने दिया। स्वागत उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र, संचालन डॉ. सुनील कुमार और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सोनल सिंह ने किया। संवाद

Hindustan Page 07

ललित कला एवं संगीत विभाग में सत्र 2024-25 से ही कोर्स शुरू करने पर मंथन, बनेगा प्रोफेशनल कोर्स

डीडीयू में बीएफए, बीपीए की होगी पढ़ाई

सुविधा

- सेल्फ फाइनेंस की बजाय रेगुलर कोर्स के रूप में चलाने में आ रहीं अड़चनें
- डीडीयू प्रशासन की एक दशक की कोशिशें चढ़ने लगीं परवान

गोरखपुर, निज संवाददाता। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के ललित कला एवं संगीत विभाग में प्रोफेशनल कोर्स के रूप में बीएफए और बीपीए कोर्स के संचालन को लेकर कवायद तेज हो गई है। परास्नातक में भी एमए की बजाय एमएफए और एमपीए के संचालन की योजना है। डीडीयू प्रशासन इसे नियमित कोर्स के रूप में संचालित करना चाहता है लेकिन अड़चनों को देखते हुए सेल्फ फाइनेंस कोर्स को लेकर भी मंथन चल रहा है। सेल्फ फाइनेंस कोर्स के रूप में सहमति बनी तो सत्र 2024-25 से ही यह शुरू हो सकता है।

> रेगुलर कोर्स के रूप में संचालन में कई अड़चनें हैं। उसमें एक साल तक का समय लग सकता है। इसे देखते हुए सेल्फ फाइनेंस कोर्स पर भी मंथन किया जा रहा है। फाइन एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स के प्रोफेशनल कोर्स नहीं होने के कारण यहां के छात्रों विभिन्न संस्थानों में चयन में मुश्किलें आती हैं। कोशिश है कि जल्द इसका संचालन हो सके।
>
> **- प्रो. पूनम टंडन, कुलपति, डीडीयू**

इस विषय में इतनी सीटें

विभागाध्यक्ष प्रो. उषा सिंह के मुताबिक प्रोफेशनल कोर्स शुरू होने पर बीपीए के गायन में 30, सितारवादन में 20 और तबला में 20 सीटों पर, बीएफए के पेंटिंग में 20, व्यावहारिक कला में 15 व मूर्तिकला में 10 सीटें उपलब्ध होंगी। एमपीए के गायन में 20, सितारवादन में 15 और तबला में 15, एमएफए के पेंटिंग में 20 व्यावहारिक कला व मूर्तिकला में 15-15 सीटों की क्षमता है। यानी यूजी में कुल 115 और पीजी में 100 सीटों की क्षमता है।

देश के ज्यादातर विश्वविद्यालयों में फाइन एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स को प्रोफेशनल कोर्स का दर्जा दिया जा चुका है। डीडीयू में करीब एक दशक से प्रोफेशनल कोर्स को लेकर प्रयास होते रहे लेकिन अलग-अलग कारणों से मामला अधर में अटका रहा। अब डीडीयू प्रशासन ने इसे गंभीरता से लेते हुए पुनः कोशिशें तेज कर दी हैं।

डीडीयू इसे नियमित पाठ्यक्रम के रूप में चलाना चाहता है। यही इसके संचालन की राह में रोड़ा बना हुआ है, क्योंकि रेगुलर कोर्स के लिए ढेरों औपचारिकताएं पूरी करनी होती हैं। यदि सत्र 2024-25 में सेल्फ फाइनेंस कोर्स के रूप में संचालन नहीं हुआ तो सत्र 2025-26 से रेगुलर कोर्स के रूप में संचालन की अनुमति शासन से मिल सकती है।

एक विषय के रूप में होता है संचालन : वर्तमान में कला संकाय के अधीन ललितकला विभाग का संचालन होता है। बीए के विद्यार्थी अन्य विषयों के साथ किसी एक विषय के रूप में ललितकला या संगीत पढ़ते हैं। प्रोफेशनल कोर्स होने पर यूजी में ही फाइन आर्ट्स और परफार्मिंग आर्ट्स के विषयों की अलग-अलग पढ़ाई हो सकेगी।

इसलिए है प्रोफेशनल कोर्स की जरूरत : किसी शिक्षण संस्थान या विभिन्न एजेंसी या एकेडमी में चयन के वक्त डिग्री की जांच होती है तो डीडीयू के विद्यार्थी इसी में छंट जाते हैं। दूसरे संस्थानों के विद्यार्थी प्रोफेशनल कोर्स की डिग्री लगाते हैं तो डीडीयू वाले बीए और एमए की।

Inext Page - 02

गोवि में बीएफए-एमएफए व बीपीए-एमपीए की पढ़ाई

ललित कला एवं संगीत विभाग में अगले सत्र से कोर्स चलाने का विचार

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (12 May): जल्द ही ललित कला व संगीत के विद्यार्थियों को बीएफए-एमएफए (बैचलर व मास्टर आफ आर्ट) और बीपीए-एमपीए (बैचलर व मास्टर आफ परफार्मिंग आर्ट) करने का मौका गोरखपुर में ही मिलेगा. दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय इन सभी कोर्स को ललित कला एवं संगीत विभाग में चलाने की दिशा में आगे बढ़ चला है. इन्हें वित्तपोषित कोर्स के रूप में शुरू करने की है लेकिन आई तो संस्थान इसे स्व-वित्तपोषित कोर्स के रूप में भी शुरू कर सकता है. विश्वविद्यालय की पूरी कोशिश है कि यह कोर्स सत्र 2024-25 से ही चलने लगे. यदि किसी वजह से यह संभव नहीं हो सका तो सत्र 2025-26 में तो हर हाल में यह कोर्स विश्वविद्यालय में संचालित होंगे, ऐसा विश्वविद्यालय प्रशासन का कहना है. वर्तमान में ललित कला व मंच कला एक विषय के रूप में स्नातक कला पाठ्यक्रम का हिस्सा है, जिसे तीन विषय में से एक विषय के रूप में विद्यार्थियों को पढ़ने का अवसर मिलता है. ऐसे में जो विद्यार्थी इन विषयों में विशेषज्ञता वाला पाठ्यक्रम करना चाहते हैं, उन्हें उन संस्थानों की ओर रुख करना पड़ता है, जहां इनका संचालन होता है. ऐसा इसलिए कि गोरखपुर और आसपास के किसी जिले में इस पाठ्यक्रमों का स्वतंत्र रूप से संचालन नहीं होता.

चित्त को स्थिरता देने का काम करता है योग

GORAKHPUR (12 May): गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरखनाथ शोधपीठ में योग पर वर्कशॉप हुआ. जिसमें योग प्रशिक्षक डा. विनय कुमार मल्ल ने चक्रासन, शीर्षासन, हलासन समेत जलनेति आदि का प्रशिक्षण दिया. कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र ने किया. कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी रहे. उन्होंने कहा कि योग बहुत व्यापक है. गोरखनाथ की गोरखबानी भारत में सर्वत्र गूंजती है. योग चित्त को स्थिरता प्रदान करता है.

प्रतियोगिता का आयोजन

महायोगी गुरु श्रीगोरखनाथ शोधपीठ में योग कार्यशाला के साथ ही द्वितीय जनपद स्तरीय योगासन प्रतियोगिता का आयोजन भी डिस्ट्रिक्ट योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन, गोरखपुर के तत्वावधान में किया जा रहा है. यह प्रतियोगिता दो दिनों तक चलेगी. विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा. इस योगासन प्रतियोगिता का उद्घाटन मुख्य अतिथि रमेंद्र कुमार सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, गोरखपुर और विशिष्ट अतिथि अभिषेक कुमार पांडेय, प्राचार्य, जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान, गोरखपुर, विवेक जायसवाल, जिला समन्वयक, समग्र शिक्षा, गोरखपुर, राजू कुमार जायसवाल, चेयरमैन, जी. डी. गोयनका पब्लिक स्कूल की मौजूदगी में होगा. योगासन प्रतियोगिता के लिए शोधपीठ में रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं.